Globus Journal of Progressive Education
Vol 6/No 1/Jan-Jun 2016 ISSN: 2231-1335

देवनागरी लिपि का विकास

अमरेन्द्र भूषण पाण्डेय
शोधकर्त्ता, ओपीजेएस यूनिर्व्हसिटी, चूरू, राजस्थान
डॉ0 सुमित्रा चौधरी
शोध निर्देशक, ओपीजेएस यूनिर्व्हसिटी, चूरू, राजस्थान

सारांश

देवनागरी लिपि का उद्भाव कब हुआ, यह लम्बे समय तक विवाद का विषय रहा| यूरोपीय विद्वान वूलर, मेक्समूलर, बर्नेल आदि तीसरी – चौथी शताब्दी ई. पू. से पीछे जाने को तैयार न थे| पहली बार गौरीशंकर हीराचन्द ओझा ने 'प्राचीन भारतीय लिपि माला' में भारत में लिपि ज्ञान की प्राचीनता सिद्ध की| अब तो यह सिद्ध हो गया है कि ई. पू. 4000 वर्ष पहले भी भारत में सैन्धव लिपि प्रचलित थी| वास्तव में सैन्धव लिपि विश्व की प्रन्चिनतम ज्ञात लिपि है| अनेक विद्वान जैसे राजबली पाण्डेय, सुनीतिकुमार चटर्जी, उदयनारायण तिवारी आदि मानते है की सैन्धव लिपि से ही ब्राही लिपि का विकास हुआ जो समस्त उत्तरभारत की लिपियों का आधार है| ई. पू. पाँचवी शताब्दी से 350 ई. तक भारत में ब्राही लिपि का ही प्रयोग होता था| ब्राही लिपि से क्रमशः गुप्त लिपि (पाँचवी शताब्दी तक), कुटिल लिपि (छठी से नौवीं शताब्दी तक) तथा प्राचीन नागरी लिपि (बारहवी शताब्दी तक) का विकास हुआ| गुप्त राजाओं के काल में प्रयुक्त होने के कारण यह गुप्त लिपि कहलाती थी| इसी प्रकार, अक्षरों की आकृति अधिक वक्र होने के कारण इसे कुटिल लिपि कहा गया| कुटिल लिपि से प्राचीन नागरी के चार रूप विकसित हुए – अर्धनागरी, पूर्वीनागरी, नन्दिनागरी तथा सामान्य नागरी| देवनागरी का सम्बन्ध सामान्य नागरी से स्वीकार किया जाता है| कैथी, बंगला, उड़िया, मैथिली, असमिया, राजस्थानी, महाराष्ट्री, महाजनी, गुजराती आदि लिपियाँ भी प्राचीन नागरी के विभिन्न रूपों से विकसित है|

मूल शब्दः देवनागरी लिपि

प्रस्तावना

विविध भारतीय लिपियों के विकासक्रम में देवनागरी लिपि का उदभव आठवीं – नौवीं शताब्दी के आसपास कुटिल लिपि से हुआ था, इसके प्रमाण उपलब्द हैं| दक्षिण में इसका प्रचार नौवीं शताब्दी के अंत में मिलता है

किन्तु दक्षिण में इसका प्रचार आठवी शताब्दी में भी था, इसके प्रमाण उपलब्द है| दक्षिण के राष्ट्रकूट रजा दन्ति दुर्ग के समानगढ़ से प्राप्त 754 ई. के दानपत्र की लिपि नागरी (नंदी नागरी) ही है | बड़ौदा के राजा ध्रुवराज ने भी नौवीं शताब्दी में अपने राज्यादेशो और शिलालेखो में इसी लिपि का प्रयोग किया | उत्तरभारत में प्राचीन नागरी का सबसे प्राचीन रूप कन्नोज के प्रतिहार वंशी राजा महेन्द्रपाल प्रथम के दिधवा दबौली के 797 ई. के दानपत्र में प्रयोग होता है | वस्तुतः बारहवी शताब्दी तक प्राचीन नागरी वर्तमान नागरी बन पाई | इस सम्बन्ध में गौरीशंकर हीराचंद ओझा का कथन है कि "दसवीं शताब्दी की, उत्तरी भारतवर्ष की नागरी लिपि में में कुटिल लिपि की नाँई अ, आ, ध, प, म, य, ष, और स के सिर दो अंशो में विभक्त मिलते है | परन्तु ग्यारहवी शताब्दी में ये दोनों अंश मिलकर सर की एक लकीर बन जाती है और प्रतेक अक्षर का सिर उतना लम्बा रहता है जितनी की अक्षर की चौड़ाई होती है| ग्यारहवी शताब्दी की नागरी लिपि वर्तमान नागरी से मिलती-जुलती है बारहवीं शताब्दी से वर्तमान नागरी बन गई है | केवल 'इ' और 'घ' में ही कहीं पुरानापन नजर आता है | बारहवी शताब्दी से लगाकर अब तक नागरी लिपि बहुधा एक ही रूप में चली आती है, तो भी लेखन – शैली और देश – भेद से कुछ अन्तर रह ही जाता है |"

साहित्य की समीक्षा

यमुना (2014) यह अध्ययन हिंदी में रूसी से कृदंत / मौखिक कृदंत / निरपेक्ष सहभागी निर्माण के अनुवाद पर केंद्रित है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि लिखित और बोलचाल की भाषा में दोनों का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के पार्टिकल और वर्बल पार्टिकल वाक्यांश, गहन क्रिया और पैत्रिक वाक्य हैं और वे काल के रूपों का उपयोग करने से अधिक सामान्य हैं। आधुनिक भारतीय लेखक गंगा प्रसाद विमल की कहानी "बाल" इन व्याकरण के कई रूपों से भरी पड़ी है। लेखक ने प्रशंसनीय बच्चे के साथ होने वाली दुर्घटना का वर्णन किया है और भारतीय समाज और अछूतों की जाति के बीच संबंध को दर्शाता है। इस संबंध में हम निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित करते हैंः विभिन्न प्रकार के पार्टिकलर और वर्बल कृपालु कंस्ट्रक्शन का हिंदी में विश्लेषण करने के लिए,हिंदी पाठ में इन निर्माणों के उपयोग की सूत्र क्रिया और सांख्यिकीय विश्लेषण का अनुवाद। माइकल शापिरो के अनुसार हिंदी में आंशिक निर्माण उनके कार्यों द्वारा विभेदित हैं – उपयोग करने की क्रियाविशेषण और विशेषण रूप। रूसी विद्वानों क्लउैपजे और न्सजेपमितवअ ने प्रतिभागी निर्माणों और उनके उपप्रकारों को अलग–अलग

किया हैः सरल कृदंत और सरल मौखिक कृदंत और यौगिक कृदंत और यौगिक शाब्दिक कृदंत। पूर्ण भागीदारी निर्माणांत वे यौगिक मौखिक कृदंत के रूप में परिभाषित किए गए हैं। क्रियात्मक क्रिया के साथ–साथ, क्रिया–संबंधी तृतीयक क्रिया का भी उल्लेख कर सकता है जो क्रिया–पूर्वक की क्रिया से पहले होती हैमाइकल शापिरो के अनुसार हिंदी में आंशिक निर्माण उनके कार्यों द्वारा विभेदित हैं – उपयोग करने की क्रियाविशेषण और विशेषण रूप। क्रियात्मक क्रिया के साथ–साथ, क्रिया–संबंधी तृतीयक क्रिया का भी उल्लेख कर सकता है जो क्रिया–पूर्वक की क्रिया से पहले होती है : – "ऊंची इमारत से गिरकर बच्चा सीधे जमीन पर गिर गया"। माइकल शापिरो बताते हैं कि "कंजर्वेटिव कंस्ट्रक्शन की हिंदी में प्राथमिक उपयोग – कर वाक्यों के निर्माण में होता है जिसमें एक ही विषय को साझा करने वाली दो गतिविधियाँ होती हैं और जिसमें से एक गतिविधि को दूसरे के लौकिक एंटेकेड के रूप में माना जाता है।

माया बर्गर, (2014) सामाजिक सरोकार और दलित चेतना हिंदी में दलित कहानियांः भारतीय सामाजिक व्यवस्था में, नंगे हाथों से काम करना और उस मेहनत के साथ रोटी कमाना अवर कार्य माना जाता है। एक व्यक्ति जो घरों, कार्यालयों, शौचालय, सड़कों, स्कूलों, कोलाज आदि में हर पल स्वच्छता बनाए रखने के लिए सेवा करता है, उसे अपवित्र और अयोग्य (अछूत) माना जाता है। दलित समाज हजार साल से अज्ञानता के अंधेरे में डूबा हुआ है। उन्हें मौलिक मानवाधिकारों से वंचित किया गया है। वे सार्वजनिक कुओं और तालाबों का पानी भी नहीं पी सकते थे। उन्हें पूरी सामाजिक व्यवस्था से भेदभाव किया गया है और विभिन्न प्रतिबंधों के कारण उन्हें धोखा दिया गया है। उनके साथ जानवरों की तरह व्यवहार किया जाता था न कि इंसानों की तरह। कोई साहित्य, कोई धर्म, कोई देवी–देवता, कोई तथाकथित बुद्धिजीवी उनके पक्ष में नहीं थे।उन्हें कुत्तों और बिल्लियों के अलावा गैर–अन्य माना जाता था। वह एक सामान्य नागरिक की तरह गाँव की गलियों में भी नहीं चल सकता। दलित चेतना का उदय डॉ। अंबेडकर के आगमन से हुआ था और उसी ने साहित्य पर प्रभाव डाला था। जब पज दलित 'शब्द साहित्य के साथ जुड़ता था, तो यह मानवीय सरोकारों की बुनियादी बातों को दर्शाता, दिखाता और व्यक्त करता है। हम आधुनिक दलित साहित्य की जड़ों को कबीर और रविदास के उपन्यास में

देख सकते हैं। हिंदी के लेखक जैसे ओमप्रकाश वाल्मीकि, डॉ एन सिंह कंवल भारती, मोहनदास नैमिश्रे, डॉ जय प्रकाश कर्दम, डॉ। सुशीला टाकभौरे, रजत रानी मीनू, अनीता भारती, सुदेश तंवर, डॉ सुमित्रा मिरोल आदि ने नई दिशा दी है। दलित साहित्य को उन्होंने कहानियों में सहजता से काम लिया है लेकिन उनकी आत्मकथा ने पाठकों को बेचैन कर दिया है। आज के दौर में जब सभी विषयों पर चर्चा हो रही है, जब दलित विमर्श की बात हो रही है, तो क्यों नहीं? दलित कहानियाँ हैं जीवन संघर्ष और बेचैनी के दस्तावेज। मेरा मानना है कि मानव समाज साहित्य के माध्यम से इस भेदभाव रेखा को समाप्त कर सकता है और मानवीय मूल्यों को स्थापित किया जा सकता है।

देवनागरी पर अन्य लिपियों का प्रभाव

एतिहासिक घात – प्रतिघातो के परिणामस्वरूप भारत में अनेक विदेशी जातियों का आगमन हुआ फलत: अनेक विदेशी शब्दों का हिंदी में समावेश हुआ और हिंदी आगमन हुआ फलतः अनेक विदेशी शब्दों का हिंदी में समावेश हुआ और हिंदी की वर्णमाला में कुछ नई ध्वनियाँ जुड़ गई | साथ ही, अनेक हिंदीतर भर्ती भर्ती भाषाओ और नाग्रित्र लिपियों ने भी देवनागरी को प्रभावित किया; जैसे –

- गुजराती वर्णों में शिरोरेखा नहीं होती, उसके प्रभाव से अनेक हिंदी प्रयोक्ता देवनागरी लिपि को बिना शिरोरेखा के लिखते हैं | कभी कभी शीघ्रतापूर्वक लिखने के प्रयास में भी शिरोरेखा – विहीन नागरी का प्रयोग किया जाता है|

- बंगला लिपि में अधिकांश वर्ण चौकोर न होकर कुछ कुछ गोलाकार होते हैं | देवनागरी लिपि में भी कुछ वर्ण (प, ष) बंगला लिपि से प्रभावित हैं |

- मराठी लिपि के प्रभाव से भी देवनागरी लिपि में कुछ चिन्ह अपनाए गए हैं | 'ऋ' के स्थान पर 'अ' तथा 'झ' के स्थान पर ' ' का प्रयोग इसी का परिणाम है | 'ल' के साथ ही 'ळ' के प्रयोग की भी सिफारिश भी कुछ नागरी सुधर समितियों द्वारा की गई है |
- देवनागरी लिपि में जिहामूलीय ध्वनियो को अंकित करने के लिय कोई चिन्ह न था, परन्तु अब अरबी – फरसी की ध्वनियो को व्यक्त के लिए नीचे बिंदु (.) लगाने का प्रचलन हो गया है, जैसे – नकद, बालिग़, बर्फी, आफ़त, दरोगा आदि |

- अंग्रेजी का भी देवनागरी लिपि पर काफ़ी प्रभाव पड़ा है | अंग्रेजी रोमन लिपि में लिखी जाती है और यह भी देवनागरी लिपि के समान ध्वन्यात्मक लिपि है | अंग्रेजी ध्वनियो के लिए कुछ नए चिन्ह बनाए गये है जैसे – ' O' के स्थान पर 'ऑ' चिन्ह को स्वीकृति दी गई है –College कॉलिज, Doctor डॉक्टर, Officer ऑफिसर , Copy – कॉपी आदि | रोमन लिपि के प्रभाव से देवनागरी लिपि में अल्पविराम (,), अर्धविराम (;), प्रशनवाचक (?), विस्मयबोधक (!), उद्धरण – चिन्ह ("....") और संयोजक – चिन्ह (-) का प्रयोग भी प्रचुरता से होने लगा है | कुछ आधुनिक लेखक और समाचार – पत्र तो पूर्णविराम (|) की अपेक्षा अंग्रेजी के अंग्रजी के पूर्णविराम चिन्ह बिन्दु (.) का प्रयोग भी करने लगे हैं |

- इस प्रकार आधुनिक देवनागरी लिपि का मूलाधार तो ब्राही लिपि ही है | काल के थपेड़े सहती, बहती नदी के सद्रश देवनागरी लिपि आज अपने परिनिष्ठत रूप से दिखाई देती है | यह रूप इसके विकास के क्रमिक इतिहास का साक्षी है |

उपसंहार

मानकीकरण से तात्पर्य – 'मानक' शब्द संस्कृत 'मान' में स्वार्थे प्रयय 'क' के योग से बना है |हिंदी में यह अंग्रजी शब्द standard के प्रतिशब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है | ' मानक' के लिए पहले परिनिष्ठित, टकसाली, आदर्श, शुद्ध आदि शब्द भी प्रचलन में रहे हैं परन्तु अब 'मानक' शब्द ही अधिक प्रचलित हैं | मानक भाषा के संदर्भ में चार तत्वों की चर्चा विशेष रूप से की जाती है – मानकीकरण, स्वायत्तता, ऐतिहासिकता और जीवन्तता | मानकता का आधार भाषावैज्ञानिक अथवा व्याकरणिक न होकर सामाजिक स्वीकृति होता है | किसी समाज के अधिकांश शिष्ट, महत्वपूर्ण, शिक्षित लोगो की भाषा के मध्य से उभरनेवाला सर्वमान्य रूप ही मानक कहलाता है | किसी भी भाषा और विशेषतः लिपि के मानकीकरण की प्रक्रिया 'चयन' से प्रारम्भ होती है | लिपि के संधर्भ में इनका तात्पर्य है किसी लिपि में प्राप्त एकाधिक विकल्पों में से एक का चयन करना या होना | हिंदी में अधिकांश वर्णों में यह चयन स्वयं हो गया है, कुछ में अभी एकाधिक रूपों का प्रयोग हो रहा है | इसी प्रकार, कहीं – कहीं कुछ विद्वानों को नागरी में अन्य कुछ दोष भी नजर आते हैं | इनका संक्षित्प वर्णन नीचे किया जा रहा है|

देवनागरी लिपि के दोष

- शिरोरेखा सजावट की चीज है इसका प्रयोग अनावश्यक है |
- कई वर्णों के रूपों में साम्य है – ख-रव, ध-घ, भ-म |
- संयुक्त व्यंजनों – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र का प्रयोग अनावश्यक है |
- कुछ व्यंजनों अनुक्रमो के संयुक्त रूप अनावश्यक हैं – त, क्त, घ, झ, ह्न, स्त्र, द्व, द्ध, ह्न |
- नागरी मई कई भारतीय और विदेशी भाषाओ की अनेक ध्वनिओ के लिए वर्णों का अभाव है |
- इसमें न्ह्, म्ह्, लह्, के लिए स्वतंत्र चिन्हों का अभाव है |
- ऋ और ष् का प्रयोग अनावश्यक है |

संदर्भ

- यमुना काचरू, कोड – मिश्रण, शैली प्रदर्शनों की सूची और भाषा भिन्नताः अंग्रेजी में हिंदी काव्य रचनात्मकता, वॉल्यूम 35, अंक 23, पीपी 80–100, 2014 ।

- माया बर्गर, हिंदी साहित्य के माध्यम से अनुवाद में भारत, वॉल्यूम 45, अंक 32, पीपी 90–100, 2014 ।

- प्रभा चंद्रा, ए हिस्ट्री ऑफ़ मॉडर्न क्रिटिकिज्मः रोमांटिक ऐज, लंदनः जोनाथन केप, जर्नल ऑफ लिटरेचर, कल्चर एंड मीडिया स्टडीज, खंड 3, अंक 5, पीपी 55–59, 2012 ।

- डॉ सीमंत, भारतीय अंग्रेजी साहित्य में लोक तत्व, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टी डिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, वॉल्यूम 13, अंक 78, पीपी 45–57, 2012 ।

- डॉ सुनीति, ए स्टडी ऑफ़ इंडियन इंग्लिश पोएट्री, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक रिसर्च पब्लिकेशंस, वॉल्यूम 2, अंक 10, पीपी 134–145, 2012 ।